16 /11 /81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनूभूति

विजयमाला के नम्बर का आधार

पुरुषार्थ और प्राप्ति की अनूभूति

➢➢ मै विजयी रत्न आत्मा हूँ

➳ _ ➳ श्रेष्ठ सिकिलधी बच्ची हूँ

→ अनेक बार मिलन मनाती हूँ

→ बापदादा के साथ कंबाइंड हूँ

➳ _ ➳ मिलन की स्मृति ईमर्ज रहती हैं

→ नॉलेज के आधार से

→ चक्र की स्मृति स्पष्ट हैं

→ 84 जन्मों के चक्र में

■ वर्तमान जन्म सर्वश्रेष्ठ है

→ मै कौन की पहेली को जान गयी हूं

→ मेरा जितना स्नेह जितना समय याद

→ उसी स्नेह से बाबा भी याद करते हैं

→ याद की माला में नम्बर आगे लेती हूँ

→ सदा उड़ती कला का अनुभव कर रही हूँ

■ डबल लाइट हूँ

➳ _ ➳ हर सेकेन्ड, हर संकल्प बाप के साथ का,

➳ _ ➳ सहयोग का, स्नेह का अनुभव करती हूं

→ सदा बाप के साथ का

→ हाथ में हाथ का अनुभव करती हूँ

➳ _ ➳ मै विघ्न विनाशक आत्मा हूँ

→ सर्व विघ्न को पार कर उडती रहती हूं

■ उमंग उत्साह के पंखों से

- हिम्मत के पंखों से

→ विघ्न विघ्न नहीं हैं

→ साइड सीन हैं

→ मै विजय माला का मणका हूँ

➳ _ ➳ अमृतवेले अपने आपको चेक करती हूँ

→ याद की शक्ति से

→ सम्बंध की शक्ति से

→ रूहानी टीवी में देख सकती हूँ

→ बुद्धि की लाइन क्लीन एंड क्लियर

→ होने से जान जानती हूँ

→ मै आत्मा बाप समान बनती जा रही हूँ

- बाप के समीप
- अनुभव करती हूँ

➢➢ मै चान्सलर आत्मा हूँ

➳ _ ➳ आगे नंबर लेने का चान्स मिला हैं

→ सीट फ़िक्स की सिटी नहीं बजी

→ जो चाहूँ बन सकती हूँ

→ टू लेट का बोर्ड नहीं लगा

- ओटे सो अर्जुन

→ निमित्त बन नम्बर वन आने वाली आत्मा हूँ

→ सत्य स्वरूप को अनुभव कर रही हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा सफलता मूर्त हूँ